पक्षी अपने घोंसले के रंग को बदल लेते हैं

पक्षी सक्रिय रूप से अपने घोंसले के रंग को ऐसा बनाते हैं कि वह आसपास के परिवेश से घुल-मिल जाए।

क्या पक्षियों के घोंसले परिवेश में इसलिए घुल-मिल जाते हैं क्योंकि वे घोंसले बनाने की सामग्रियां, जैसे टहनियां और पत्तियां उसी परिवेश से प्राप्त करते हैं या क्या वे ऐसा सोच समझकर करते हैं? इस सवाल का जवाब पाने के लिए यूके स्थित युनिवर्सिटी ऑफ सेंट एंड्रयूज़ कि इडा बैली और उनकी टीम ने पक्षियों के परिवेश को बदलकर देखा।

उन्होंने 21 नर ज़ेब्रा फिन्चेस (नर इसलिए कि घोंसला तो नर ही बनाते हैं) के पिंजरों की दीवारों को नए रंगों नीले, गुलाबी या पीले रंग के वालपेपर से ढंक दिया। फिर पक्षियों को घोंसले को सजाने के लिए दो तरह की सामग्री उपलब्ध कराई - एक तो इन्हीं दीवारों के रंगों वाली थी जबकि दूसरी इसके विपरीत रंगों की।

सभी पक्षियों ने मुख्य रूप से अपना घोंसला बनाने के लिए दीवारों के रंगों से मिलती-जुलती सामग्री का इस्तेमाल किया। बैली का कहना है कि उनके प्रयोग से पहली बात तो यह पता चलती है कि पक्षी अपना घोंसला बनाने के लिए सामग्रियों में रंगों का इस्तेमाल बहुत सावधानीपूर्वक करते हैं। मगर पक्षियों ने कुछ ऐसी सामग्री भी अपने घोंसले में लगाई जो घोंसले से मिलती-जुलती नहीं होती। यह एक ट्रिक होती है जिसे *डिसरप्टिव कैमोफ्लाज* कहते हैं - घोंसले को पूरी तरह परिवेश में घुल-मिल जाने से बचाना। इस तरह का कैमोफ्लाज शिकारियों को छलता है। ***(स्रोत फीचर्स)***